पाठ-भवन में इतिहास शिक्षण

निर्मल के. महतो

भारत और दुनियाभर में रवींद्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन पर काफी चर्चा हुई है। हालांकि विषय शिक्षण के तौर-तरीकों पर अनुभव बहुत कम सामने आए हैं। पाठ-भवन में इतिहास शिक्षण के तौर-तरीकों पर यह एक संक्षिप्त लेख है जो रवींद्रनाथ के इतिहास शिक्षण संबंधी विचारों को भी पेश करता है।

'आश्रम को जीवन के समृद्ध और विविध पक्षों को पूर्णता से प्रस्तुत करने वाले रचनात्मक केंद्र के रूप में होना चाहिए, जो अपने शिक्षार्थियों को शैक्षिक प्रशिक्षण भी दे सके। जहां तक संभव हो सके, यहां इस बात के प्रावधान होने चाहिएं कि शिक्षा की विभिन्न शाखाओं में उनकी संभावना और मौकों का पूरी तरह विकास और उपयोग संभव हो सके।'

रवींद्रनाथ ठाकुर

परिचय

यह आलेख पाठ-भवन में इतिहास पढ़ाने के विभिन्न तरीकों की विवेचना करने की कोशिश करता है। रवींद्रनाथ ठाकुर पर हाल ही में हुए शोध विभिन्न आयामों, जैसे, ठाकुर की विज्ञान, पर्यावरण और इतिहास के बारे में उनके विचारों पर चर्चा करते हैं। ठाकुर का शैक्षणिक मॉडल और नए स्कूल के आंदोलन से इसका संबंध एक और पहलू है, जिसने विद्वानों को आकर्षित किया है। इतिहास पढ़ाने की तकनीक पर सबसे कम बातचीत हुई है। अपने बचपन के स्कूली अनुभवों से वह खुश नहीं थे, शिक्षण के प्रचलित तरीके उनको पसंद नहीं आए थे। टैगोर ने प्रकृति की गोद में शांति निकेतन में एक नया स्कूल बनाया। उन्होंने नई पाठ्यचर्या, भाषा, स्वायत्तता और प्रेरणादायी तकनीकें ईजाद कीं।

टैगोर के इतिहास के बारे में विचार

रवींद्रनाथ टैगोर और बंकिम चंद्र चटर्जी ने उपनिवेशवादी इतिहास-लेखन के खिलाफ आलोचनात्मक रुख अपनाया। औपनिवेशिक इतिहास-लेखन दरअसल, भारत के ऊपर ब्रिटिश शासन को जायज ठहराने और सांस्कृतिक वर्चस्व को स्थापित करने के वैचारिक प्रयास का ही एक औजार था। 19वीं सदी में ब्रिटिश सिविल सेवा अधिकारियों द्वारा लिखी गईं अधिकतर किताबें भारतीय शिक्षार्थियों को पढ़ाई गईं, जिसने

इतिहास-लेखन की कटु आलोचना को जन्म दिया। भारतीय विश्वविद्यालय के पहले स्नातक बंकिम चंद्र ने बार-बार इतिहास की ब्रिटिश व्याख्या की फजीहत की है। उन्होंने यह सवाल भी उठाया है कि हम अपना इतिहास खुद कब लिखेंगे। गुरुदेव रवींद्रनाथ ने इसे और भी बेहतर तरीके से रखा हैः उन्होंने लिखा कि हम अपनी मातृभूमि को ब्रिटिश प्रशासकों और इतिहासकारों द्वारा लिखे गए इतिहास में देख ही नहीं पाते हैं, जबकि दूसरे देशों में इतिहास उस देश की जनता के सामने देश की पहचान खोलता है। उन्होंने इतिहास के वैकल्पिक स्वरूप की वकालत की और भारत के इतिहास को राजनीतिक घटनाओं और शासकों के बीच की लड़ाई से हटकर माना।

भारतीय इतिहास की अपनी व्याख्या में वह दिखाना चाहते हैं कि भारतीय इतिहास दरअसल इतिहास की विभिन्न युगों का मिलन है, जो आक्रामक विरोधी ताकतों के साथ संघर्ष और द्वंद्व की दास्तान है। टैगोर के लिए, भारतीय इतिहास अनिवार्य तौर पर सामाजिक इतिहास है और इसीलिए यह बहुआयामी और अंतहीन इतिहास है। यह इतिहास राजनीतिक उथल-पुथल की अनगिनत घटनाओं में भी अबाधित रहा है। उन्होंने विचारों के इतिहास के बारे में भी बात की है। वर्तमान को समझने के लिए, हमें अतीत को अच्छी तरह समझना होगा। टैगोर ने न केवल खेती और उसके जंगल क्षेत्र में विस्तार का इतिहास लिखा, बल्कि जल-संकट को भी वर्णित किया, इसके स्त्रियों के साथ रिश्ते को बताया और इसके प्रबंधन की जरूरत को बताया। ये आयाम पर्यावरणिक इतिहास के लिए जरूरी हैं।

इतिहास पढ़ाने की विधि

इतिहास पढ़ाना एक जटिल काम है। इसमें विषयवस्तु को ऐसे रूप में बदलना होता है, जो सीखने वालों के लिए सार्थक तो हो ही, विषय का सच्चापन भी बचा रहे। प्राथमिक स्तर पर छात्रों को नैतिक शिक्षा और महान् लोगों (गौतम बुद्ध, अशोक, अकबर, गुरुनानक, शिवाजी) की जीवनियां पढ़ाई जाती थीं। शिक्षक कहानी सुनाने वाले अंदाज में घटनाओं को बताते थे और छात्र उन्हें ध्यान से सुनते थे। जब वे अपनी कॉपी में कहानियां लिख लेते थे, तो उन्हें कहानियों की किताब में बदल दिया जाता था। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की सोच थी कि किसी शिक्षार्थी को प्रेरित करने के लिए किसी किताब की पंक्तियों की तुलना में शिक्षक की आवाज अधिक प्रभावशाली है। यह पाठ्यक्रम के परिचय में ही लिखा हैः 'विषय में रुचि जगाने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षक के व्यक्तित्व को पाठ के निरूपण में सबसे अहम् कारक माना जाता है।' अपने स्मृतिलेख में धीरेन कृष्ण देबबर्मा ने लिखा है कि उनके शिक्षक कालीमोहन घोष (1882-1940) का व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था। कथावाचन के तरीके का इस्तेमाल करते हुए, वह विषयवस्तु को बहुत रोचक बना देते थे। रोमन नायकों, प्रशासकों, देशभक्ति और खेल के कई ऐतिहासिक महत्त्व की घटनाओं को बताते हुए वह भारतीय स्वाधीनता संग्राम के लड़ाकों के बलिदान और त्याग को भी बताते थे और ब्रिटिश हुकूमत के अंदर रहने की शर्म को भी। पाठ-भवन के एक भूतपूर्व शिक्षक नेपाल चंद्र राय (1867-1944) ने भारत और इंग्लैड के इतिहास पर बच्चों और युवाओं के लिए कुछ पाठ्यपुस्तकें लिखीं। वहां उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं को कहानियों की तरह कहा है। कई बार उन्होंने महान् लोगों और ऐतिहासिक व्यक्तित्वों की जीवनी सुनाई।

गुरुदेव ने भारतीय इतिहास की साफ तस्वीर और शिक्षण को शिक्षार्थियों के लिए सीधा ग्रहण करने लायक बनाया, न कि उन्हें ऐतिहासिक घटनाओं और नामों का रट्टा मारने को प्रोत्साहित किया, ताकि शिक्षार्थी इतिहास की एक बेहतर समझ विकसित कर सकें। उन्होंने यह भी सलाह दी कि निचली कक्षा में भूगोल और इतिहास की एक ही किताब हो। बाद में, उनको इतिहास और भूगोल अलग से और विस्तार से पढ़ाया जा सकता है। डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर की किताब *इंडियन एंपायर* इस क्रम में एक आदर्श किताब है। यदि हम इसे अनुवादित कर सकें, तो शिक्षार्थी और उनके अभिभावक लाभान्वित होंगे। कालक्रम (टाइमलाइन) इतिहास को व्यवस्थित और प्रदर्शित करने की लाभकर रणनीति है। समय का दृश्यात्मक प्रदर्शन दरअसल एक ताकतवर शैक्षणिक औजार है। हालिया शोधों से पता चलता है कि कालक्रम के प्रभावी इस्तेमाल ने शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान को निर्मित किया है और सामाजिक एवं भौतिक बदलाव की उनकी दृश्यात्मक समझ को बढ़ाया है। पाठ-भवन में हम लगभग 100 वर्षों से कालक्रम का इस्तेमाल कर रहे हैं। गुरुदेव ने एक खाली ऐतिहासिक कालक्रम तैयार किया और उसे ज्ञानेंद्रनाथ चट्टोपाध्याय को भेज दिया। उन्होंने सलाह

दी कि इस खाली प्रारूप को बच्चों को दिया जाए, जिसे वे ही भरें। इस तरह वे एक अर्थपूर्ण तरीके से इतिहास पढ़ सकते थे। शिक्षार्थी इस्लामिक और ब्रिटिश दौर के इतिहास का सारांश लिखते थे और उसके बाद गुरुदेव एक विश्लेषण करते थे, जिससे शिक्षार्थियों को इतिहास पढ़ने में मदद मिलती थी। शिक्षार्थी तारीख और घटनाओं सहित उस विश्लेषणात्मक टेबल को दीवार पर लटका कर याद करते थे, ताकि हरेक दिन वे टेबल पर देख सकें। शिक्षार्थियों की लेखन-क्षमता को विकसित करने के लिए, उत्तर लिखने का काम दिया जाता था। उन्होंने इस सिलसिले में संतोष कुमार मजूमदार की एक किताब 'इंगलैंड्स वर्क इन इंडिया' का उदाहरण दिया है।

हालिया शोध बताते हैं कि कुछ शिक्षार्थी स्कूली इतिहास को ठुकरा देते हैं और पारिवारिक व सामुदायिक कहानियों पर अधिक भरोसा करते हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि बाद वाली चीज अधिक फायदेमंद है। 100 वर्ष पहले गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने यह जान लिया था कि इतिहास को पढ़ाना केवल कक्षा तक सीमित नहीं होना चाहिए। पाठ-भवन के शिक्षार्थी शांतिनिकेतन के पड़ोस में रहने वाले समुदायों की धार्मिक रीतियों, रिवाजों और व्यवहारों के बारे में खोज करते थे। टैगोर लिखते हैं, 'उनको हिंदू, मुसलमान और संथाल गांवों में रहने वालों के बीच की विविधता का पता लगना चाहिए। किसी खास समुदाय के बीच मौजूद विविधता का भी विस्तार से पता चलना चाहिए। यह जरूरी है कि धार्मिक उत्सवों, भूतों और बुरी आत्माओं में विश्वास, स्वास्थ्यगत उपचार के देसी तरीके, जन्म से संबंधित तथ्यों, मौत, विवाह और गांव में पूजा आदि के बारे में पूछा जाए और विस्तृत रपट तैयार की जाए।'

शिक्षकों ने भी इतिहास को पढ़ाने के लिए कई सारी नीतियां और तरीके अपनाएः- मॉडलिंग, मूर्तियां, कोलाज, चित्र, पेंटिंग, कार्टून, नाटक, नृत्य, पत्रिका इत्यादि का सहारा लिया। शिक्षार्थी विविध प्रकार की मूर्तियां और मॉडल बनाते थे, जिनका प्रदर्शन होता था। वह सुनी हुई कहानियों के आधार पर चित्र बनाते थे। शिक्षार्थियों को पुराने सिक्के जमा करने को प्रोत्साहित किया जाता था और कई बार वे अपने निरीक्षण पर एक टिप्पणी भी करते थे। उनको किसी प्रोजेक्ट में हिस्सा लेने को भी प्रोत्साहित किया जाता था। इस तरह उनको प्राथमिक स्रोतों का परिचय मिल जाए, जिससे पता चले कि इतिहासकार और पुरातत्वविद् किस तरह अपने स्रोतों का अध्ययन करते हैं। इससे उनको जरूरी कौशल और गुण हासिल करने में सहायता मिली।

फिलहाल, पाठ-भवन ऐतिहासिक स्थलों के वार्षिक भ्रमण का आयोजन करता है। आश्रम सम्मिलनी खास साहित्य सभा का आयोजन करती है, जो ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण पर आधारित लेखन पर केंद्रित है। उनको सृजनात्मक और कल्पना से भरपूर गतिविधियों में शिरकत करने को प्रोत्साहित करते हैं। शांति निकेतन के इतिहास से उनके सुपरिचित होने के लिए शांति निकेतन के विभिन्न पुरातात्विक स्थलों तक घूमने को कहा जाता है। वरिष्ठ छात्र ऐतिहासिक विषयों पर बहसों का आयोजन करते हैं। यहां शिक्षार्थियों को सीखने में सहभागी माना जाता है, न कि ज्ञान की किसी स्थापित कुंजी को ग्रहण करने वाला भर समझा जाता है।

इसीलिए, यहां पाठ-भवन में इतिहास की पढ़ाई के लिए एक अलग तरह का तरीका इस्तेमाल किया जाता है। यहां शिक्षा कक्षा तक सीमित नहीं है। शिक्षार्थी अपने आश्रम जीवन से पाठ पढ़ते हैं, जो पूरी तरह व्यापक है। यह सचमुच एक अनूठी व्यवस्था है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 इस बात की पैरवी करता है कि बच्चों की जिंदगी को बाहरी वातावरण से जोड़ा जाए। यह स्कूल घर और समुदाय के बीच की खाई को पाटना चाहता है। हमारा आश्रम ही हमारा स्कूल और घर, दोनों है। यह एक समुदाय का हिस्सा है और इस मामले में आश्रम सम्मिलनी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। ◆

लेखक परिचयः शांति निकेतन के पाठ-भवन में इतिहास पढ़ाते हैं।